'गुणवत्ता अंक' या वंचना की नई साज़िश

शुभनीत कौशिक

बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी द्वारा जुलाई 2023 में विभिन्न संकायों के शैक्षणिक पदों के लिए दिए गए विज्ञापन में एकेडमिक परफ़ॉर्मेंस इंडेक्स (एपीआई) के साथ-साथ 'गुणवत्ता अंक' (क्वालिटी स्कोर) का प्रावधान दिया गया था। 'गुणवत्ता अंक' का यह प्रावधान पहले-पहल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों ने लागू किया और अब धीरे-धीरे जेएनयू, बीएचयू समेत दूसरे केंद्रीय विश्वविद्यालय भी लागू करने लगे हैं। पहले से लागू एपीआई के प्रावधान ने अकादमिक गुणवत्ता सुनिश्चित करने के नाम पर किस तरह फ़ेक जर्नल्स और उनके इर्द-गिर्द एक पूरा प्रकाशन उद्योग खड़ा किया, यह हम सभी ने विगत एक दशक में देखा है।

अब 'गुणवत्ता अंक' (क्वालिटी स्कोर) के द्वारा आईआईटी और जेएनयू, बीएचयू सरीखे संस्थानों द्वारा वंचना की एक रणनीति तैयार कर ली गई है। इस प्रावधान के अंतर्गत किसी अभ्यर्थी की गुणवत्ता इस बात से तय होगी कि उसने स्नातक, परास्नातक और पीएचडी की पढ़ाई किस संस्थान से की है। यही नहीं भेदभाव का यह स्तर शिक्षण/शोध के अनुभव पर भी लागू किया गया है।

इस प्रावधान के अनुसार जहां एक ओर केवल उन्हीं अभ्यर्थियों को गुणवत्ता के अंक प्रदान किए जाएँगे, जिन्होंने वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग (क्यूएस रैंकिंग, टाइम्स हायर एजुकेशन या एकेडमिक रैंकिंग ऑफ़ वर्ल्ड यूनिवर्सिटीज) के अंतर्गत 1-500 तक के संस्थानों से पढ़ाई की होगी या फिर उन संस्थानों से जिन्हें एनआईआरएफ़ रैंकिंग में 1-20 तक रैंक मिली हो। यहां तक कि उन्हीं शिक्षकों को शिक्षण अनुभव के अंक मिलेंगे जो वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग के अंतर्गत 1-500 तक के संस्थानों में शिक्षण किए हों। यही बात शोध अनुभव के लिए भी लागू की गई है।

गुणवत्ता का यह पैमाना अकादमिक दुनिया में किस कदर वंचना और भेदभाव को फैलाएगा उसका अंदाज़ा आप इस बात से लगाइए कि भारत में उच्च शिक्षा में छात्रों का जो सकल पंजीकरण है, उसका 94 फ़ीसदी राज्य विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में है और केवल 6 फ़ीसदी केंद्रीय विश्वविद्यालयों में (देखें, कस्तूरीरंगन कमेटी की रिपोर्ट)। अब गुणवत्ता के इस पैमाने से राज्य विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में पंजीकृत भारत के उन लाखों छात्रों के बारे में सोचिए जिन्हें केवल इसलिए गुणवत्ता अंक नहीं दिए जाएंगे क्योंकि उन्होंने उपर्युक्त रैंकिंग वाले संस्थानों में पढ़ाई नहीं की। यही नहीं राज्य विश्वविद्यालय, महाविद्यालय या कोई अन्य केंद्रीय विश्वविद्यालय भी जो इस रैंकिंग के भीतर नहीं होगा, उनके शिक्षकों को शिक्षण अनुभव के अंक भी नहीं मिलेंगे।

प्रकाशन के मामले में भी गुणवत्ता के नाम पर भेदभाव की यही नीति अपनाई गई है। जिसके अनुसार केवल क्यूवी इंडेक्स वाले जर्नल्स में प्रकाशित शोध-पत्रों को ही अंक मिलेंगे। मेरी जानकारी में हिंदी या दूसरी भारतीय भाषाओं का कोई शोध-पत्र क्यूवी इंडेक्स में शामिल नहीं है। एक ओर तो वर्तमान सरकार भारतीय भाषाओं में ज्ञान सृजन का बाजा बजाती फिरती है मगर उच्च शिक्षा की नीति बनाने वालों की निगाह में भारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं या उनमें लिखने वालों में कोई गुणवत्ता ही नहीं है। क्योंकि गुणवत्ता का मानक तो अंततः क्यूवी इंडेक्स ही तय करेगा।

स्पष्ट है कि 'गुणवत्ता अंक' का उद्देश्य इन प्रतिष्ठित संस्थानों को अकादमिक दुनिया के 'अग्रहार' में बदल देना है। जहां पढ़ने और पढ़ाने वाले ही इन संस्थानों के दायरे में प्रवेश कर सकेंगे। दूसरे लोगों के लिए उच्च शिक्षा के इन नए 'अग्रहारों' में प्रवेश करना वर्जित होगा।

व्यंग्य / डर

सोरित गुप्तो

दरवाजे को बंद कर वह चुपचाप खड़े थे। अब वह बहुत सुकून महसूस कर रहे थे। इसकी वजह भी थी। अभी -अभी उन्होंने ऑनलाइन में आर्डर किये खाने को वापस भेज दिया था क्योंकि डेलिवेरी बॉय विधर्मी था।

पर अचानक उन्हें एक अनजाना सा डर सताने लगा। उन्हें लगा कि आज तक उन्होंने ऐसी सावधानी आगे क्यों नहीं बरती? क्या पता कहां-कहां उन्हें 'उन' लोगों के हाथों से खाना खाना पड़ा होगा!

फिर उनके मन में एक विचार आया और उन्होंने झटके से परदे का एक किनारा उठाया और उस पर लगे स्लिप को देखने लगे। उस स्लिप पर उत्पादक का नाम, पता और दाम लिखा था। पर धर्म? वह तो कहीं पर नहीं लिखा था!

मन ही मन गुस्सा कर उन्होंने सोचा, "इस पर्दे को न जाने किसने बुना होगा? क्या धर्म होगा उसका जिसने इसे सिला? जाने किसने इसके कपास को पैदा किया होगा? यह सब जरूरी जानकारी तो कहीं है नहीं!"

उन्होंने एक झटके में घर के सारे परदे उतार कर घर के बाहर रख दिए।

पर केवल पर्दों से उनका मन नहीं शांत हुआ। उनके अंदर का वह डर बढ़ता ही जा रहा था। उन्होंने एक बार अपने घर को देखा। उन्हें महसूस हुआ कि वह बहुत लापरवाह थे इतने दिन! उन्हें पहली बार लगा कि वह तो अपने दुश्मनो से, विधर्मियों से घिरे जिंदगी काट रहे थे।

उन्होंने कभी जाने की कोशिश ही नहीं की कि उनका चादर, गद्दे, तकियों का धर्म क्या है? पलंग-आलमारी, कपड़े-लट्टे हत्ता की बर्तनो की न उन्होंने कभी जात पूछी और न ही यह पता किया कि उनका गिलास, चाय की प्याली का धर्म क्या है?

अब तक वह इतने लापरवाह रहे कि वह दुकान में जाते सामान का तोल -मोल करते पैसा चुकाते। बिल देखते और बस। उन्होंने अपने दराज से कुछ पुराने बिल भी खोज निकाले और ध्यान से पढ़ने लगे। उनके घर का सारा सामान कुछ ख़ास दुकानों से आता था। शहर में उनका मोहल्ला भी बहुसंख्यक आबादी वाला था। केवल यही नहीं यहां रहने वाले सब उच्च कुलीन, पढ़े-लिखे और पैसे वाले थे। यानी पूरी तरह से सुरक्षित। बहरहाल उन्होंने सभी बिलों की पड़ताल की। सभी बिलों में दुकान का नाम-पता और दाम वगैरह लिखा था पर कहीं पर भी ख़रीदे गए सामान के धर्म पर कुछ नहीं लिखा था।

"कितने लापरवाह है हम लोग!" उन्होंने मन ही मन सोचा और घर का सामान एक-एक कर घर से बाहर रखने लगे। पहले पंखे और बल्ब गए, फिर बारी थी फ्रिज-टीवी-स्मार्ट फोन-कूलर-ऐसी की। उसके बाद बारी आयी बर्तनो, साबुन-तेल-शेम्पू को घर से बाहर निकल फेंका। उन्होंने घर के राशन को भी बाहर फेंक दिया। घर से सारे रुपये पैसे भी फेंक दिए कि जाने कितने विधर्मियों के हाथों ने इन रुपयों-पैसों को छुआ होगा! घर अब खाली हो चुका था। बाल्टी, बोतल, घड़े से सारा पानी फेंक दिया।

उनकी निगाह अपने आप पर पड़ी और उन्होंने अपने सारे कपड़े उतार कर फेंक दिए कि उन्हें यह नहीं पता था कि यह कपड़े किसने सिले? धर्म क्या था आखिर उस किसान का जिसने इसके कपास को उगाया। पर जाने एक डर था जो जाने का नाम ही नहीं ले रहा था। अचानक उन्हें लगा कि उनका मकान जिन ईंटों से बना है उसके कारीगर के बारे में उन्हें कुछ नहीं पता और न ही उन्हें यह पता है कि इसको बनाने वाले मिस्त्री किस धर्म के थे।

उन्होंने एक हथौड़ा उठाया और दीवारों को तोड़ने लगे। थोड़ी ही देर में वह अब हांफने लगे थे पर दीवारों पर पड़ने वाले हथोड़े का हर चोट दीवारों को नहीं मानो उनके दिल में बरसों से घर जमाये हुए डर की एक-एक ईंट को तोड़ रहा था। पर उनकी यह ख़ुशी क्षणिक साबित हुई।

जल्द ही एक नए डर ने उन्हें बुरी तरह से जकड़ लिया। अचानक उन्हें एहसास हुआ कि यह जो हवा वह अपने फेफड़ों के अंदर ले रहे हैं वह तो कभी न कभी किसी विधर्मी ने भी अपने फेफड़ों में ली होगी। उसने फिर अपने फेफड़ों की हवा को बाहर भी फेंका होगा! एक विधर्मी के फेफड़ों की हवा वह भला अपने फेफड़ों के अंदर कैसे ले सकते हैं?

और उन्होंने सांस लेना बंद कर दिया। पर हाय! मर कर भी उनकी आत्मा को शान्ति नहीं मिली जब उनकी आत्मा ने देखा कि उनकी अस्थियों को एक पीतल के घड़े में रखा गया है।

उन्हें यह पता था कि अच्छे पीतल के घड़े तो मुरादाबाद में बनते है...!

ईसा से तीन सदी पहले मेगस्थनीज ने क़िताब लिखी थी, इंडिका

डॉक्टर राकेश पाठक

अगर आपने भूले भटके इतिहास का 'इ' भी पढ़ा है तो आपने यूनानी राजदूत मेगस्थनीज का नाम सुना ही होगा। ईसा मसीह से 3 सदी पहले यूनान में पैदा हुए मेगस्थनीज ने एक क़िताब लिखी थी, जिसका नाम 'इंडिका' है।

वह यूनानी शासक सेल्युकस निकेटर का सहयोगी था। सिकंदर की मृत्यु के बाद सेल्युकस ने भारत पर चढ़ाई की थी। तब उसका चंद्रगुप्त मौर्य से संघर्ष हुआ लेकिन अंततः उसे संधि करना पड़ी।

संधि के बाद सेल्युकस ने अपनी बेटी हेलन करनेलिया (हेलेना) की शादी चंद्रगुप्त के साथ कर दी। इसी मौके पर मेगस्थनीज को यूनान के राजदूत के तौर पर चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में नियुक्त किया गया।

सेल्युकस के लौटने के बाद मेगस्थनीज लगभग ढाई साल भारत में रहा। उसने अपने प्रवास के अनुभवों के आधार पर एक क़िताब लिखी जिसका नाम 'इंडिका' है। इस क़िताब में उसने चंद्रगुप्त के दरबार से लेकर भारतीय समाज की दशा-दिशा का वर्णन किया है।

तो भाईयो, बहनो, जब मेगस्थनीज भारत आया और उसने अपनी क़िताब का नाम इंडिका रखा, तब अंग्रेज धरती के किस छोर पर भाड़ झोंक रहे थे, कोई नहीं जानता था। समझे..!